ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

वाल्मीकि रामायण और भारतीय संस्कृति : एक विवेचन

Valmiki Ramayana and Indian Culture: A Discourse

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

गीता
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति का एक अनमोल हीरा है रामायण में भारतीय जीवन का दर्शन परंपरा का विशद वर्णन है मात्र पित्र भक्ति भातत्व प्रेम सामाजिक मर्यादा इन सब का विषय उदाहरण रामायण में देखा जा सकता है। रामायण मानवी जीवन मंत्रयों की कसौटी है त्याग तब वह बलिदान का एक जीवंत उदाहरण रामायण में मिलता है।

Yoga is a very ancient tradition of India; Yoga makes human life happy and healthy. Yoga makes the human mind and intellect healthy and healthy. Yoga gives complete control of the human brain and mind and hence the concentration concentration of the senses of the mind is yoga. it is said

मुख्य शब्द : वाल्मीकि रामायण, सहानुभूति, सहिष्णुता, सहयोग, समर्पण, सद्भाव, सदाचार, समन्वय एवं मर्यादा ।
Valmiki Ramayana, Sympathy, Tolerance, Cooperation, Dedication, Harmony, Virtue, Coordination And Dignity.

प्रस्तावना

वाल्मीकि सन्त शिरोमणि थे, उनका व्यक्तित्व अद्वितीय था, वह राम के भक्त थे, वाल्मीकि के आदर्श भगवान् राम थे, जो सत्य के पुजारी थे, अहिंसा ही राम के जीवन की कसौटी थी, उन्होंने कभी भी अनावश्यक वध नहीं किया, जब उन्हें आवश्यक लगा, तभी वध किया। रावण, कुम्भकर्ण, खर–दूषण आदि का वध करना उनकी विवशता थी, उन्होंने जिसका भी वध किया, वह आततायी था, अधार्मिक था, सत्य के मार्ग से हट चुका था, उसका व्यक्तित्त्व सम्पूर्ण सभ्य समाज को दुःख दे रहा था। धर्म की रक्षा के लिए ही राम ने अवतार लिया था। राम का उद्देश्य भारतीय संस्कृति को आक्षुण्ण रखना था। सत्य, न्याय, सहानुभूति, सहिष्णुता, सहयोग, समर्पण, सद्भाव, सदाचार, समन्वय एवं मर्यादा आदि का राम ने सदैव ध्यान रखा। कैकेयी ने राम के लिए वनवास मांग लिया, राम ने वनवास स्वीकार कर लिया। कौशल्या एवं राजा दशरथ इस कृत्य से काफी दुःखी हुए। सुमित्रा का हृदय भी दुःख से दहल गया। राजा दशरथ ने पुत्र–शोक में प्राण तक त्याग दिये। तीनों रानियाँ विधवा हो गयीं। राम के वन जाने से केवल कैकेयी ही प्रसन्न थी, शेष दोनों रानियां दुःखी थीं, पर तीनों रानियों के बीच में आपस में कोई विवाद नहीं हुआ। तीनों रानियां एक–दूसरे का सम्मान करती थीं। जब भरत कौशल्या के पास पहुंचते हैं तो कौशल्या ने भरत के साथ सद्–व्यवहार किया, भरत बेहोश हो गये, जैसे वत्सला गौ अपने बछड़े को गले से लगाकर चाटती है, उसी तरह शोक से व्याकुल हुई तपस्विनी कौशल्या भरत को गोद में लेकर रोते–रोते पूछा, 'बेटा तुम्हारे शरीर से कोई रोग तो कष्ट नहीं पहुंचा रहा है? अब इस राजवंश का जीवन तुम्हारे ही अधीन है। वत्स मैं तुम्हीं को देखकर जी रही हूँ। श्रीराम लक्ष्मण के साथ वन में चले गये और महाराज दशरथ स्वर्गवासी हो गये, अब एकमात्र तुम्हीं हम लोगों के रक्षक हो।[1]

भरत को राज्य मिला है और राम को वन। भरत के कारण ही राम को वन जाना पड़ा, फिर भी कौशल्या भरत को इतना सम्मान दे रही है। राज्य के लिए उन्हें आवश्यक मान रही है, यह कौशल्या को उदारता है। कौशल्या का हृदय व्यापक है। वह वसुधैव कुटुम्बकम् का अनुसरण करती है, जो भारतीय संस्कृति का प्राण–तत्व है।

राम अपनी माता कौशल्या के प्रति जैसा वर्ताव करते हैं, वैसा ही महाराज दषरथ की दूसरी रानियों के साथ भी करते हैं, उनका हृदय भी महान् तथा व्यक्तित्व ऊँचा है–

यां वृत्तिं वर्तते रामः कौशल्यायां महाबलः।
तामेव नृपनारीणामन्यासामपि वर्तते।।[2]

अनुसूया ने माँ सीता को नारी–धर्म का उपदेश दिया है और माँ सीता उसी के अनुसार आचरण करती हैं। अनुसूया कहती हैं कि अपने स्वामी नगर में रहें या वन में, भले हों या बुरे, जिन स्त्रियों को वे प्रिय होते हैं, उन्हें महान् अभ्युदयशाली लोकों की प्राप्ति होती है। पति बुरे स्वभाव का, मनमाना बर्ताव करने वाला अथवा धनहीन ही क्यों न हो, वह उत्तम स्वभाव वाली नारियों के लिए देवता के समान है। मैं बहुत विचार करने पर भी पति से बढ़कर कोई हितकारी बन्धु नहीं देखती। अपनी की हुई तपस्या के अविनाशी फल की भांति वह इस लोक में और परलोक में सर्वत्र सुख पहुँचाने में समर्थ होता है।[3]

रामचरितमानस में भी तुलसीदास ने अनुसूया से सीता को नारीधर्म का उपदेश दिलाया है, यह उपदेश भी आदर्षवादी है, इसमें भी पति बूढ़ा हो, रोगी हो, धनहीन हो, मूर्ख हो, अन्धा हो, बहरा हो, क्रोधी हो, अतिदीन हो, कैसा भी पति हो उसकी सेवा करनी चाहिए और उसके प्रति समर्पण का भाव रखना चाहिए, ऐसे पति का जो स्त्री अपमान करती है, वह नरकगामी होती है–

धीरज धरम मित्र अरुनारी।
आपद काल परिखिहहूँ चारी।
बृद्धरोगवस जड़ धनहीना।
अंध बधिर क्रोधी अतिदीना।
ऐसे हु पति कर किये अपमाना।
नारि पाव जमपुर दुःख नाना।
एकई धर्म एक व्रतनेमा काय।
बचन मन पति पद प्रेमा।।[4]।।

अनुसूया की वाणी सुनकर सीता कृतज्ञता व्यक्त करती हैं और अनुसूया की प्रशंसा करती हुई कहती हैं कि देवी! आप संसार की स्त्रियों में सबसे श्रेष्ठ हैं। आपके मुख से ऐसी बातों को सुनना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। नारी का गुरु उसका पति ही है, इस विषय में जैसा आपने उपदेश किया है– वह बात मुझे पहले से ही विदित है–

नैतदाश्चर्यमार्यायाम् यन्मां त्वमनुभाषसे।
विदितं तु ममाप्येतद् यथा नार्याः पतिर्गुरुः।।[5]

भारतीय संस्कृति हिन्दूधर्म से ओत–प्रोत है। भारतीय संस्कृति अधर्मियों को स्वीकार नहीं करती है। बालि ने सुग्रीव की पत्नी का हरण कर लिया था, उसके डर से सग्रीव वन में रहने लगे थे, उन्होंने ऋष्यमूक पर्वत को अपना निवास स्थान बनाया था। बालि को राम ने बाण से आहत कर दिया, उसकी पत्नी तारा विलाप करती हुइ बालि के पास बैठकर कहती है, 'मैंने आपके हित की बात कही थी, परन्तु आपने उसे नहीं स्वीकार किया, मैं भी आपको रोक रखने में समर्थ न हो सकी। इसका फल यह हुआ कि आप युद्ध में मारे गये। आपके मारे जाने से मैं भी आपके पुत्र सहित मारी गयी, अब लक्ष्मी आपके साथ ही मुझे और मेरे पुत्र को भी छोड़ रही है–

न मे वचः पथ्यमिदम् त्वया कृतं
न चास्मि शक्ता हि निवारणे तव।
हता सपुत्रास्मि हतेन संयुगे
सत त्वया श्रीर्विजहाति मामपि।।[6]

बालि के मर जाने पर सुग्रीव दुःखी होता है, जो प्रायः इस संसार में देखने को मिलता है। वह श्रीराम से कहता है– अपने कुल का नाश करने वाला पापपूर्ण कर्म को करने वाला मैं प्रजा के सम्मान का पात्र नहीं रहा। राज्य पाना तो दूर की बात है, मुझमें युवराज होने की भी योग्यता नहीं है–

नार्हामि सम्मानमिमं प्रजानां,
न यौवराज्यं कुत एव राज्यम्।
अधर्मयुक्तं कुलनाशयुक्त–
मेवंविधं राघव कर्म कृत्वा।।[7]

अध्ययन के उद्देश्य

भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पोषक एवं प्रेरक वाल्मीकि रामायण में मानवीय शिक्षा और संस्कृति को आमजन तक पहुंचाने का प्रयत्न किया गया है। मानवीय मूल्यों का विकास एवं सामाजिक संस्कारों के विस्तार को जनमानस तक पोषित करना वाल्मीकि रामायण का उद्देश्य है ,ताकि देश की भावी पीढ़ियां अपनी संस्कृति और सभ्यता के विषय से परिचित हो सकें तथा देश के गौरव को उन्नत कर सके।

निष्कर्षत

निष्कर्षतः लिखा जा सकता है कि रामायण में भारतीय संस्कृति का वास्तविक स्वरूप आदि से अन्त तक दिखायी देता है। वाल्मीकि ने भारतीय संस्कृति का सदैव ध्यान रखा है। इस महाकाव्य के नायक श्रीराम हैं, जो तपस्वी तथा सर्वगुणसम्पन्न हैं, उनका हर आचरण भारतीय संस्कृति के अनुरूप है। उनका उद्देश्य सर्वजनहिताय है। राम ने सम्पूर्ण परिवार का सम्मान किया है, कैकेयी ने राम को वन दिया, उसको भी राम ने उचित सम्मान दिया। अन्ततोगत्वा राम ने भरत को राजा बना ही दिया। राम ने सदैव परोपकार के लिए कार्य किया और जहां भी विजय प्राप्त की, राजा दूसरों को बनाया।

कहा जा सकता है कि वाल्मीकि रामायण भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की महान पोषक है इसमें वर्णित मानवीय मूल्यों का जनमानस के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है श्री राम और सीता के प्रेरणादायी से अनेक प्रकार की प्रेरणा भारतीय समाज को मिलती रही है तथा भारतीय समाज एक नई दिशा को प्राप्त करता रहा है । रामायण भारतवर्ष में ही नहीं अपितु बहुत से अनेक देशों में भी बहुत प्रचलित है तथा वहां का जनमानस वाल्मीकि रामायण के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाता रहा है यही वास्तव में वाल्मीकि रामायण की विशेषता है कि विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार रामायण के माध्यम से होता रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वाल्मीकि रामायणः अयोध्याकाण्ड*
2. *वाल्मीकि रामायणः 18.4.*
3. *तदेव, 23, 24, 25*
4. *तुलसीकृत रामचरितमानसः अरण्यकाण्ड पृ. 407*
5. *वाल्मीकि रामायणः अयोध्याकाण्ड, 118.2*
6. *तदेव, किष्किन्धाकाण्ड, 23.30*
7. *तदेव, 24.15*